हे प्रभु! सद्ज्ञानदाता (इष्ट प्रार्थना)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. आपकी नजरों ने समझा...
2. हे प्रभु! आनन्ददाता... 3. ओ वसन्ती पवन पागल...)

हे प्रभु/(गुरु)! सद्ज्ञान दाता... प्रज्ञा मुझे भी प्राप्त हो...
उस ही ज्ञान से मेरा दुर्गुण ... शीघ्रता से नाश हो... हे प्रभु !... (ध्रुव)...
सत्यग्राही न्यायवन्त : धैर्यशाली मैं बनूँ...
स्वावलम्बी श्रमशील... ध्यान योगी मैं बनूँ...
शोध-बोध ज्ञान करके... आत्म कल्याण करूँ ... हे प्रभु !(1)
सत्य-शिव-सुन्दर स्वरूप... स्व हिये मैं नित धरूँ...
पर्यावरण करूँ सुरक्षा... सम्वेदनशील बनूँ...
आत्म कल्याण को करके... विश्व कल्याण करूँ... हे प्रभु !(2)
सर्वजीव जिये संसार में... औरों को भी जीने दो...
परस्पर उपग्रह से युक्त... हर जीव जयवन्त हो...
सब बने उदार भावी... सत्यग्राही सनम्र हो.. हे प्रभु !(3)
प्रकृति ना हो विकृत.. संस्कृतिमय संस्कार हो...
आत्मवत् व्यवहार सदा... सर्वदा सर्वत्र हो...
गुण-गुणी समादर हो... सर्वजीव सुखी रहो... हे प्रभु !(4)

साधुओं की सामूहिक परमात्मा प्रार्थना

(चाल : ऐ मालिक तेरे बन्दे हम...) -आचार्य कनकनन्दी

हे परमात्मन् ! तेरे भक्त हम... तेरी भक्ति से बने भगवन्...
तेरा ज्ञान करे.. तेरा ध्यान धरे... करे तेरा ही चिन्तन-मनन...
(हे परमात्मन् !... आ... आ... आ.. (ध्रुव) ...)
तव ज्ञानार्थे पढ़े आगम... तव ध्यानार्थे एकाग्रमन...
तव चिन्तन में प्रमुदित मन... तव प्राप्ति हेतु बने श्रमण...
अरिहन्त-सिद्ध व आचार्य... उपाध्याय - साधु तेरे रूप...
तेरा ज्ञान करे... तेरा ध्यान धरे... (1)
अर्हन-सिद्ध पूर्ण परमातम... शेष तीनों आंशिक परमातम...
पूर्ण परमात्मा बनना चाहे हम.. अतः अन्तर आतम बने हम...
आत्म विशुद्धि समता शान्ति से... हमें बनना है परमातम...
तेरा ज्ञान करे.. तेरा ध्यान धरे... (2)
ख्याति-पूजा-लाभ त्यागे हम...राग-द्वेष-मोह त्यागे हम..
ईर्ष्या-घृणा व तृष्णा त्यागे हम.. कट्टर संकीर्णता त्यागे हम...
विकल्प-संक्लेश त्यागे हम... अपेक्षा-प्रतीक्षा त्यागे हम...
तेरा ज्ञान करे... तेरा ध्यान धरे... (3)
तव आराधना -पूजा करे... तव प्राप्ति के प्रयत्न से..
अहंकार त्याग स्वानुभवी बने.. अशुभ से शुभ-शुद्ध बने हम...
अन्तर आतम से बने परमातम.. 'कनक' शुद्ध रूप परमातम..
तेरा ज्ञान करे... तेरा ध्यान धरे ...(4)

Scanned by TapScanner

ज्ञान-ध्यानी-तपस्वी गुरुगण वन्दना

(चाल : ज्योति कलश छलके...) -श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

वन्दन गुरु चरणे... वन्दन गुरु वृन्दे...
जिनके गुण गण मंगलकारी... सर्व जीव हित में.. वन्दन.. (ध्रुव)...
महावीरकीर्ति महान् गुरुवर... सिद्धान्तशास्त्री विद्या विशारद...
बहुभाषी यतिवर... महाज्ञानी मुनिवर... वन्दन... (1)
विमलसागर वात्सल्य मूर्ति... जन-जन के हितकारी/(उपकारी) गुरुवर...
शिष्य भरत सिन्धु... गुण अनुमोदक/(सहज-सरल-मूरत)...
वन्दन ... (2)
सम्मतिसागर भारत गौरव... दृढ़ संकल्पी तप सम्राट...
चतुर्विध संघ के... पालक दयालु गुरु... वन्दन ... (3)
गणधराचार्य कुन्थुसागर... नन्दी संघ के महा गुरुवर...
आगम के ज्ञाता... विशाल संघ नायक... वन्दन... (4)
कनकनन्दी महाविज्ञानी... नन्दी संघ के शिक्षा गुरुवर...
स्वाध्याय तपस्वी... विश्व धर्म प्रभाकर... वन्दन... (5)

बच्चों तुम निर्माता हो !

(चाल : हम को मन की शक्ति देना...) -आचार्य कनकनन्दी

बच्चों तुम निर्माता हो... भावी भाग्य के..
स्वयं के विकास के... राष्ट्र निर्माण के... बच्चों.... (ध्रुव)...
तीर्थेश माता-पिता भी... जो न कर पाए...
तीर्थेश जो कर पाए... वैसा तुम करो...
आज जो भ्रष्टाचार है... कल उसे मिटा सको...
आज जो न हो पाया... कल तुम कर पाओगे... स्वयं के ... (1)
तुम वह स्वस्थ्य बीज हो... विशाल वृक्ष के...
जाति-पन्थ नाम पर... कोई फूट ना डाले...
स्वार्थ से भी ऊँचे है... मूल्य शान्ति के... स्वयं के.... (2)
संकीर्ण स्वार्थ के लिए.. घुटने न टेकना...
दिल-दिमाग-जीभ को... पक्का सदा रखना...
सत्य-समता-शान्ति को... त्याग न करे... स्वयं के... (3)
'कनकनन्दी' भावना... विकास तुम करो...
विकास न रुके कभी... मैत्री भाव हो...
जीवन सुखमय बने... प्रकाश विस्तारे... स्वयं के... (4)

सौजन्य - अल्पेश आयरन एण्ड बिल्डिंग मटेरीयल प्रो. अल्पेश जैन
चेतना डेन्टल क्लिनिक डॉ.नीरज जैन, ग.पु.काँ. सागवाड़ा

संस्करण - 2020, प्रतियाँ - 1000

Scanned by TapScanner

विद्या तेरी धारा अमृत

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : गंगा तेरी पानी अमृत....)

विद्या तेरी धारा अमृत... झर-झर बहती जाए...
युगों-युगों से भारत जनता.. तुझसे अमृत पाए... विद्या... (ध्रुव)...
तीर्थेश हिमालय से तू निकसी... गणधर प्रवाहित धारा...
ऋषि-मुनि-पाठक-सूरी से... सेवित निर्मल धारा...
ज्ञानी-विज्ञानी-प्रजाजन भी... तुझसे जीवन पाए... विद्या... (1)
अध्यात्म तेरी मुख्य धारा... नद प्रवाहित मंदाकिनी...
भिन्न-भिन्न नदी प्रवाहित धारा... भाषा व गणितमयी...
विज्ञान-शिल्पी-आयुर्वेदमयी... संगीत विभिन्न धारा... विद्या... (2)
संस्कार-संस्कृति-दया-उदारता... पवित्र बहती धारा...
अनन्त हुए सम्तृप्त तेरे द्वारा... पावन हुए अनन्ता ...
तुझसे भारत हुआ विश्वगुरु... पूजित सभ्य संसार... विद्या... (3)
तेरी पवित्र धारा में अब... बहती विकृति धारा...
संकीर्ण स्वार्थ व भौतिकता की.. बहती गटर धारा...
परस्पर भेद विद्वेष बान्ध से. रुकी आपकी धारा... विद्या... (4)
पुण्य पुरुषार्थी भागीरथी जागो... करो हो विकृति दूर...
स्वयं तृप्त हो, तृप्त भी कराओ... भारत सन्तान सारा...
विश्व सन्तान को तृप्त हेतु तुम... विस्तारो पवित्र धारा... विद्या...(5)

करता हूँ वन्दना आत्मज्ञानी

(चाल : आधा है चन्द्रमा) -आचार्य कनकनन्दी

करता हूँ वन्दना आत्मज्ञानी/(आत्मध्यानी) ...
सत्य - समता के तुम खानी/(स्वामी)... करता हूँ... (ध्रुव)...
शत्रु-मित्र में कोई भेद नहीं... अपना-पराया कोई (भाव) नहीं...
धनी-गरीब का भेद नहीं... राजा-रंक में भेद नहीं...
कामिनी-कांचन का मोह नहीं... हानि-लाभ में साम्य तू ही... (1)
स्व-पर का भेदज्ञान किया... ज्ञान -ज्ञेय को ज्ञात किया...
हेय-उपादेय तुम ज्ञाना... ग्राह्य-अग्राह्य को पहिचाना...
अज्ञान-मिथ्या को परिहारा... संक्लेश शत्रु को तुम मारा... (2)
आत्म तत्त्व के अनुगामी/(अन्वेषक)... विश्व विज्ञान पारगामी...
शील गुणों के तुम हो स्वामी... तुम्हारी दृष्टि दूरगामी.../
(निर्विकार हो ज्ञानी - ध्यानी)
निर्मल भाव के तुम स्वामी... आत्मानुभवी व अभिरामी... (3)
ख्याति-पूजा में नाही प्रेम... आप में समाए विश्व प्रेम...
स्व-पर हितैषी तव भाव... संकीर्ण स्वार्थ का अभाव...
'कनकनन्दी' तेरा सदा भक्त... तेरे गुणों में सदा अनुरक्त... (4)

Scanned by TapScanner

एक लड़की को देखा तो ऐसा माना.... ?

(चाल : इक लड़की को देखा...) -आचार्य कनकनन्दी

एक लड़की को देखा तो ऐसा माना... सती ब्राह्मी–सुन्दरी–चन्दना–चेलना...
सीता–मैनासुन्दरी–गार्गी–सुलोचना (सती)...
मीरा – मैडमक्यूरी– नायडूसरोजिनी ... (1)
एनीबेसेंट–नाइटेंगल–मदर टेरेसा... सुद्धणया से सभी शुद्ध आत्मा...
तन–मन–इन्द्रिय व जाति परे...
पन्थ–मत–काला–गोरा से परे..एक... (2)
राष्ट्र–भाषा–शिक्षा–धन–जन परे... लड़की भी है आत्मा सभी सीमा परे...
द्रव्य–भाव–नो कर्म सहित/ (रहित) भी...
चमड़ी–दमड़ी–डिग्री सीमा परे...एक...(3)
कर्म सापेक्ष है लड़की संज्ञी पच्चेन्द्रिय.. त्रस पर्याप्तक औदारिक देह..
प्रथम से पंचम गुणस्थान सम्भव...
दशप्राण सहचार संज्ञायुक्त...एक... (4)
मनुष्य गति व तेरह योग सहित... असंयम से संयमासंयम युक्त...
छहों ज्ञान भी यथायोग्य सम्भव... तीन दर्शन भी यथायोग्य सम्भव..एक.. (5)
भव्य–अभव्य व छहों लेश्यायोग्य.. आत्म विकास करने हेतु होती योग्य
केवल कन्या नहीं होती है भोग्य वस्तु...
भ्रुण हत्या से ले न दहेज हत्या योग्य...एक... (6)
कन्यायें! तुम न करो फैशन–व्यसन... अनैतिक काम से लेकर आत्मपतन...
स्व–आत्मा स्वभाव को तुम पहचानो...
आत्म विकास हेतु 'कनक' करे आह्वान... एक... (7)

मुनिसंघ आया आनन्द छाया

(चाल : हे गुरुवर... नगरी-नगरी...) -मुनिसंघ आगमन गीत...

मुनिसंघ आया आनन्द छाया, जन–गण–मन हरषाया है
ज्ञान वर्षा हुई प्रभावना हुई, जड़ता का नाश कराया है... (स्थायी/धत्ता)
वात्सल्य बढ़ा संगठन हुआ, वैर–विरोध का नाश हुआ
आत्मज्योति जागी मोहमाया भागी, आत्मबल प्रगटाया है....(1)
भेदज्ञान हुआ वैराग्य बढ़ा, पाप ताप नाश हुआ
विवेक जगा कुकृत्य त्यागा, ममत्व भाव भागा है... (2)
संस्कृति पाया विकृति नशाया, फैशन–व्यसन से दूर हुआ
अभक्ष्य छोड़ा मिथ्यात्व तोड़ा, सात्विक सम्यक्त्व से जुड़ा... (3)
आहार देते सेवा भी करते, सातिशय पुण्य कमाते है.
भावना भाते पावन बनते, आतम रस सुख पाते हैं...(4)
गुरु गुण गाते आत्मगुण पाते, संक्लेश भाव से दूर हैं
'कनकनन्दी' भावे मुनिसंघ आवे, सब को मिले सद्ज्ञान है... (5)

Scanned by TapScanner

कुछ बच्चों से भी जाना दयादि सहज धर्म...

''परस्परोपग्रहो जीवानाम्''-दया दान सेवा परोपकार जीवों का सहज गुण

चाल : एक लड़की को देखा... - आचार्य कनकनन्दी

कुछ बच्चों को पढ़ा तो ऐसा जाना... दया दान सेवा को सहज धर्म पाया...
यथा मछली के तैरना पक्षी के उड़ना... दया दान सेवा जीवों के सहजगुण/
((धर्म) माना ... कुछ ... (ध्रुव))

हर जीव है चेतनामय व अहिंसक... सम्वेदनशील व आध्यात्मिक...
कर्मों के कारण भले विकारी जीव... सहजधर्म को भले करते विभाव/
(विकृत) कुछ... (1)

एलेक्स (अमेरिका) एना (बीजिंग) नवीद (पाक) मेरिका (सर्बिया) को पढ़ा...
(मेरा भाव तो गद्‌गद् हो उच्छल पड़ा...)
जीवन्त धर्म को प्रयोग से सिखा रहे...
(विश्व मानवों को ये बच्चे पढ़ा रहे... कुछ... (2)

धर्म प्रयोग से ये मानवों को सिखा रहे...
धर्म तो दया दान सेवा बता रहे...
संकीर्ण जाति–मत–पन्थ–परम्परा परे...
धर्म तो सम्वेदनशीलता परोपकार पूरे... कुछ... (3)

धर्म नहीं है कट्‌टरता – क्रूरता–हिंसा...
(राग–द्वेष–वैरत्व–ईर्ष्या–घृणा–तृष्णा...)
अन्याय–अत्याचार–भेदभाव... पर निन्दा–अपमान व आतंकवाद... कुछ (4)

धर्म तो आकाश सम होता व्यापक...
(विश्वमैत्री विश्व शान्तिकर मांगलिक..)

प्रेम–करुणा–सहयोग–स्वार्थ त्याग...
(रोगी–गरीब–असहायों का सहयोग... कुछ.... (5))

केवल बच्चों में ही नहीं है यह भाव...
(अनेक पशु–पक्षी में भी है यह भाव...)

पुराण–इतिहास से ले विदेशी टी.वी. में देखा...
(बादल–नदी–वृक्षादि से भी यह सीखा... कुछ (6))

किन्तु हाय! ये संकीर्ण स्वार्थी मानव...
राजनीति–व्यापार से ले धर्म पर्यन्त...

सहज धर्म से भी करते हैं विपरीत...
(इन बच्चों व पशु–पक्षी से भी वे निकृष्ट.. कुछ (7))

बिना शिक्षा व कानून धर्म से भी... ये सहज भाव–व्यवहार करणीय...
यथाश्वास ग्रहण (क्रिया) व रक्त संचालन होता...
(तथाहि सहजता से ये कर्म करणीय... कुछ (8))

केवल बाह्य शिक्षा कानून धर्मादि से.. न होगा स्व–पर–विश्व कल्याण
इस हेतु चाहिए सहज–पावन–भावकर्म...
(अतएव 'कनकसूरी'करे विश्व को आह्वान... कुछ (9))

उक्त बच्चों के भाव (भी) मुझे अधिक भाए..
(बालकाल से ही मेरा भाव ऐसा रहा..)

अतः इन बच्चों से हुआ मेरा भाव प्रभावित...
(विश्व को जताने हेतु मैं काव्य बनाया...कुछ... (10))

Scanned by TapScanner

महान् बालकगण

(चाल : आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ...) -आचार्य कनकनन्दी

आओ बच्चों तुम्हें सुनाऊँ... सुगाथा बालकगणों की...
जिसे सुनकर तुम भी बनो... उनके सम महान् भी ...
सुनो हे बालकगण! ... महान् बालकगण... जागो हे बालकगण ! ... (स्थायी)

बाल्यकाल है आदर्शकाल, शिक्षा संस्कार लक्ष्य के ।
इसी काल में तन–मन–अक्ष, होते हैं निर्माण योग्य के ।।
आठ वर्ष अन्तर्मुहुर्त में, तीर्थंकर बन सकते हैं।
इतने काल में साधु बन, आचार्य उपाध्याय बनते हैंऽऽ।।
इतने काल में सम्यक्त्वी बन, आहारदान भी दे सकते हैं।
पूजा–आराधना–स्वाध्याय करके, श्रेष्ठ बालक बनते हैं।।
सुनो हे बालकगण! महान् बालकगण... (1)

भद्रबाहु व जिनसेन स्वामी, बाल्यकाल में साधु बने।
शकुन्तला पुत्र वीर भरत भी, सिंह के संग खेल खेले।।
शंकराचार्य भी आठवें वर्ष में, चारों वेद के ज्ञानी बने।
बारहवें (वर्ष) में सर्व शास्त्र पढ़े, सोलहवें वर्ष में भाष्य लिखेंऽऽ।।
गुरुनानक भी नवमें वर्ष में, आध्यात्म के प्रेमी बने ।
सोलहवे वर्ष में ज्ञानेश्वर भी, ज्ञानेश्वरी लेखन किए।।
सुनो हे बालकगण! महान् बालकगण... (2)

स्वामी दयानन्द सरस्वती भी, चौदहवें वर्ष में विरक्त हुए।
चौदहवें वर्ष में वीर शिवाजी भी, राज्य शासन प्रारम्भ किए।।
विवेकानन्द भी अल्प आयु में, विदेशों/(धर्म संसद) में भाषण दिए।
खुदीराम बोस भगतसिंह व चन्द्रशेखर क्रान्तिवीर हुएऽऽ।।
चौदहवें वर्ष में सावरकर भी, क्रान्तिकारी वीर बने।
दसवें वर्ष में लेखक बनकर, आजादी हेतु काम किए।।
सुनो हे बालकगण ! महान् बालकगण ... (3)

सुभाषचन्द्र भी बाल्यकाल से, बुद्धिमान व वीर बने ।
स्वतंत्रता हेतु देश–विदेशों में, आजाद हिन्द फौज गढ़े ।।
वीर अभिमन्यु बालकाल से ही, वीर साहसी योद्धा बने ।
चक्रव्यूह – भेदन विद्या भी, माता के गर्भ में ही पढ़ेऽऽ।।
बाल्यकाल की भावना मेरी (भी), फलीभूत हो रही है।
तुम भी बालक महान् बनो, 'कनक' की शुभकामनाएँ हैं।।
सुनो हे बालकगण ! महान् बालकगण .... (4)

Scanned by TapScanner